congratulation

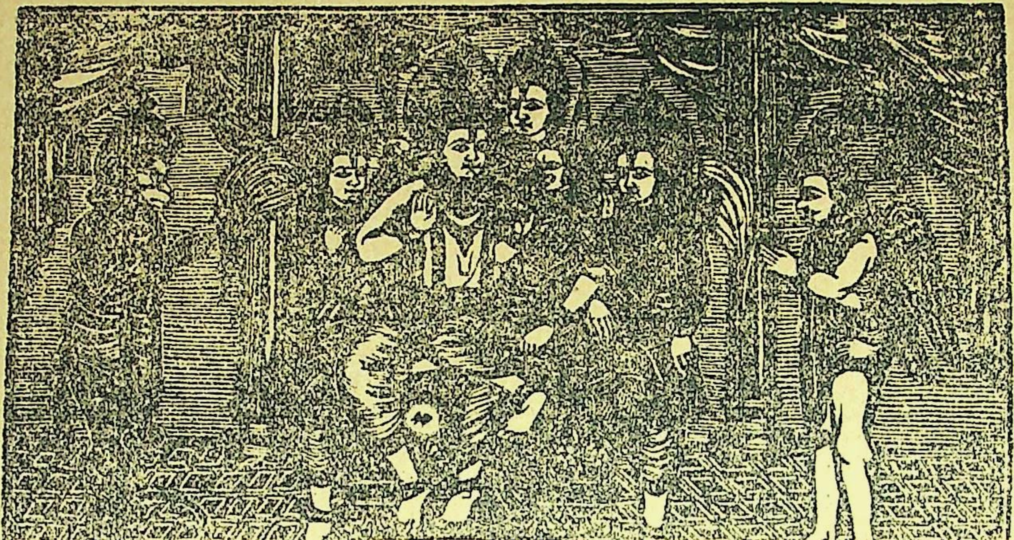
के [illegible] (पेट [illegible] कितना [illegible] गोय)

درگا سپت شتی

अथ तुलसीदासकृतरामायण माहात्म्य

अथ तुलसीदासजीवनचरित्र

अथ तुलसीदासकृतबरवारामायण



तोनिस्तार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ रामायणसुरधेनुसमाना । दायकअभिमत
फलकल्याना ॥ गुणसमूहकविसकैकौनगानि । जासुप्रभावसरिसचिंताम
नि ॥ रामअयनरामायणआही ॥ वर्णिपारपावैकोताही ॥ रामायणअद्भु
तफुलवारी । रामभ्रमरभूषितरुचिभारी ॥ श्रीरामायणजेहिघरमाहीं । भू
तप्रेततहँभूलिनजाहीं ॥ नहिंगतितहांदरिद्रहुकेरी । तहँश्रीमहावीरकीफे
री ॥ यंत्रमंत्रसगुनोतीजेती । रामायणमहँजानियतेती ॥ प्रीतिकरैंरामाय
णमाहीं । तेहिसमभाग्यवंतकोउनाहीं ॥ दोहा ॥ रामायणसमनाहिंकोऊ,
सबउपमाउपमेय ॥ उपमाभाषाओरकी, कैसेकोउकविदेय ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ त्रेतामहँभयेवाल्मीकिमुनि । तेकालियुगभयेतुलसिदासपुनि ॥
सतकरोरिरामायणभाषी । इनमथिसारसुसूक्षमराखी ॥ प्रथमकाण्डहैबा
लरसीला । जन्मविवाहरामकीलीला ॥ द्वितीयअयोध्याकाण्डप्रकासा ।

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीगोस्वामितुलसीदासकृत–

रामायणमाहात्म्यप्रारम्भः ॥

दोहा ॥ गुरुहरिहरगणईशधी, सुमिरोंतुलसीदास ॥ करतगोपालमाहात्म्यश्री, रामायणसुखरास ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रामायणसुरतरुकीछाया । दुखभयेदूरिनिकटजोआया ॥ सप्तकाण्डस्तंभसुहाई । दोहालघुशाखाछबिछाई ॥ शुचिसोरठासीटकाकोई । पत्रीबहुचौपाईजोई ॥ छंदनकीशोभाअतिरूरी । जनुनवीनअंकुरछबिपूरी ॥ अक्षरसुमनरहेगहगाई । अतिअद्भुतसुगन्धकविताई ॥ विविधप्रकारअर्थसोईफल । श्रोतासुमतिस्वादुजानैभल ॥ भक्तिज्ञानवैराग्यसरसरस । बीजदोयनिर्गुणसगुण [illegible] भुसुण्डशिवप्रथमहिगाई ॥ मोइगाईजगहेतगोसाई ॥ दोहा ॥ तुलसीदासरामायण, नाहिंकरतेपरचार [illegible] जीवये कोकर

पितुआज्ञारघुवरवनवासा ॥ पुनिअरण्यकिष्किंधाभा.. । तहांसुग्रीव शरणमहँराख्यो ॥ सुन्दरसुन्दरकाण्डसुहावन । युद्धकाण्डमहँमारेउरा वन ॥ सप्तमउत्तरपरमअनूपा । उत्सवप्रभुकौशलपुरभूपा ॥ तुलसी कृतरामायणयेती । विविधप्रकारकथाहैकेती ॥ दोहा ॥ जगवारिधिको पारनाहिं, ऐसोहै फैलाव ॥ तुलसीदास कृपाकरी, रचिरामायणनाव ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ श्रीरामायणस्वर्गनिसेनी । भक्तजननकहँआनँददेनी ॥ श्रीरामा यणसद्गुणमाता । अज्ञजाहिपढिहोहिंसुज्ञाता ॥ पापसमूहतूलकीरासी । रामायणधनंजयकनकाशी ॥ मोहपुंजतमाकिरणितमारी । कामअग्निकहँ शीतलवारी ॥ रामायणशशिकिरणिसुहाई । संतचकोरनकहँसुखदाई ॥ धन्यधन्यश्रीतुलसिदासधनि । जगहितरामायणराखीभनि ॥ नीचऊंचजे तेनरनारी । श्रीरामायणसबकहँप्यारी ॥ रामायणसोंनेहलगावैं । अधन

अपत्यसोवितसुतपावैं ॥ दोहा ॥ रामायणसोंनेहकिय, सिद्धहोतसबका
म ॥ हैसबकोकल्याणदा, पढ़ुसुनलहुविश्राम ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ निगमा
दिकते ब्रह्मकमंडल । रामायणस्थितगंगाजल ॥ भागीरथसमतुलसिदास
पुनि । भाषाप्रचुरकीनजनुसुरधुनि ॥ होतिरहैयकठावँरामायण । तेहि
मगआवतपापपारायण ॥ कछुककानमहँपरिगइबाता । चलतपंथकहुँभ
योपपाता ॥ गिरतहि तुरतछूटितनुगयऊ । तहँअद्भुतइकअचरजभयऊ ॥
ताहिलेनआयेयमदूता । निजपाशनबाँध्योमजबूता ॥ अतिआतुरहरिज
नतहँआये । छीनिलीनबहुत्रासदिखाये ॥ रामायणपैसुनियहकाना । लैजै
हैंबैठारिविमाना ॥ दोहा ॥ रामायणपरतापसों, गयोपारषदनसाथ ॥ दू
तचलेयमकेसदन, खीझतमीजतहाथ ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ निजदूतनदेखेउवि
लखाता । पूछीभानुतनयकुशलाता ॥ किनतुमकहँदीन्होदुखभाई । चा

रचतुरतुमदेहुबताई ॥ कहाकहैंतुमसोंमहाराजा । पूछततुमहिंनआवत
लाजा ॥ कोउयकमृत्युलोकवडभागी । तुलसीदासभयोवैरागी ॥ रामक
थारामायणभाषी । सोलोगनघरघरधरिराखी ॥ जेजेविविधभांतिकेपापी ।
मांसाहारीऔरसुरापी ॥ तेसवमिलिरामायणसुनिहैं । कहिहैंलिखिहैंपढि
हैंगुनिहैं ॥ तेनहिंऐहैंसदनतुम्हारे । सत्यसत्यनृपवचनहमारे ॥ दोहा ॥
लेहुपाशयेआपने, राखहुअपनेपास ॥ अमलतुम्हारोउठोअब, सुनियम
भयेउदास ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ अपनीव्यथाकहैनहिंपाये । तबलगिदूत
औरतहँआये ॥ कहनलगेरविसुतसोंरोई । तवचाकरीनहमसोंहोई ॥ जग
मेंकहूँनहुकुमतिहारो । यहसुनियमजकिरहेउविचारो ॥ अहोदूतमोहिंकहो
बुझाई । किनदीन्होममहुकुमउठाई ॥ कहाकहकछुकहीनजाई । तुलसिदा
सयकभयोगोसाई ॥ तिनकीरामायणजगव्यापी । तेइँकीन्हेपवित्रसबपापी ॥

गयेहमएकअधमगृहमाहीं । अतिदुखभयोजातकहिनाहीं ॥ तहँदेखेउँएक
कपिबलवाना । उग्ररूपसदृशहनुमाना ॥ दोहा ॥ प्राणनकोगाहकभयो,
तबहमभयअतिदीन ॥ शरणशरणतबशरणहैं, अस्तुतिबहुविधिकीन ॥
॥ ८ ॥ चौपाई ॥ तबतोंहैंप्रसन्नकपिराई । हमसनपुनिपरतीतिकराई । घरी
होयरामायणजहँवा । कबहूंभूलिनजायहुतहँवा ॥ जेश्रोतावक्तारामायण ।
कबहूंमतिजायहुतेहिआयन ॥ असहमसोंकपिशपथकराई । तबछूटन
पायोंसुनुराई ॥ सुनियमराजबहुतघबराये । निकटबुलायदूतसमुझाये ॥
नामरूपगुणकथारामकी । कियउनफेरीतौनधामकी ॥ अजामीलकीसु
रतिकरौजू । औरनकछुचितमांझधरौजू ॥ थकिसोरहेदूतसुनिवानी ।
धनिश्रीरामायणमहरानी ॥ दोहा ॥ रामायणतेजश्वरी, सतभाषाशिरमौ
र ॥ यमपुरजाकोशोरहै, समत्रयलोनहिंऔर ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ [illegible]तकम

हालग्योकिनहोई । रामायणसुनिरह्योनकोई ॥ चाहैचारौंफलकोसाधन । करुरामायणकोअवराधन ॥ रामायणसुनिपापपराने । जिमिहिमऋतुमहँमशकनशाने ॥ कलियुगतरनउपायनकोई । रामभजनरामायणदोई ॥ कथारामायणकीजहँहोई । सोगृहघरमतिजानैकोई ॥ सोघरतीर्थरूपसमभासै । तहांगयेसबपातकनासै ॥ पापवासदेहीमहँतबलग । श्रीरामायणसुनैनजबलग ॥ उदयपुरानीपुण्यहोयजब । रामायणमहँमनलागैतब ॥ दोहा ॥ रामायणकेसुनतहीं, छूटिजायप्रेतत्व ॥ जाकेपढेसुनेते, सूझतहैपरतत्व ॥ १० ॥ चौपाई ॥ कोजानैरामायणकोरस । यहतोहैसंतनकोसरवस ॥ वनजसनेही अलिगणजैसे । भक्तनप्रियरामायणतैसे ॥ त्यागिभक्तजनग्रंथअनेकू । धारणकियरामायणएकू ॥ भक्तनकहँहैभक्तिअनूपा । रसिकजननकहँहैरसरूपा ॥ ज्ञानमयीतिनकहँजेज्ञानी । तुलसीतारनत

रनबखानी ॥ कामक्रोधरुजवशसंसारा । ओषधिरामायणअनुसारा ॥ रामायणमहँनेहनजाको । जीवतशवसमजानियताको ॥ रामायणजाकहँ प्रियनाहीं । वृथाजन्मताकोजगमाहीं ॥ दोहा ॥ रामायणअमृतकथा, ले तनताकोस्वाद ॥ तिनकोनिश्चयजानिये, हैंपूरेदनुजाद ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ रामायणविधि कहौंविशारद । सनत्कुमारसोंभाषीनारद ॥ सहितविधान सुनैजोकोई । सहजमुक्तिपावैनरसोई ॥ कार्तिकमाघचैत्रचितलाई । नवदिनकहहकथासुखदाई ॥ ब्रह्ममुहूर्तसमयहोजबहीं । कर्मकरैशौचादि कतबहीं ॥ करैदंतधावनलटजीरा । मज्जनकरैधरैमनधीरा ॥ पुनिरामाय णपुस्तकअरचै । प्रेमसहितगंधादिकचरचै ॥ ॐनमोनारायणमंत्रभनी जै । तीनआहुतीहोमकरीजै ॥ मनवचकर्मपापतनुकेरे । छूटिजातनाहिं [illegible]वतनेरे ॥ दोहा ॥ यावि[illegible]ायणविधिहिं, जेकरिहहिं [illegible]लाय ॥

रामधामतेजाइहैं, संश्रितदुखहिमिटाय ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ जोकछुकार जकहँकोइजाई । सुमिरिचलैसोयहचौपाई ॥ प्रविशनगरकीजैसबकाजा । हृदयराखिकोशलपुरराजा ॥ जोविदेशचाहैकुशलाई । तोयहसुमिरिच लैचौपाई ॥ रथचढिसिया सहितदोउभाई । चलेवनहिअवधहिं शिरनाई ॥ भूतपिशाच चाहिजबलागै । यहसोरठापढेसोभागै ॥ सोरठा ॥ वंदौंपवन कुमार, खलवनपावकज्ञानघन ॥ जासुहृदयआगार, बसहिंरामशरचाप धर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शत्रुनिवारणचहौजोभाई । भावसहितजपुयहचौपा ई ॥ जाकेसुमिरनतेरिपुनाशा । नामशत्रुहनवेदप्रकाशा ॥ यहचौपाईज पैजोकोई । अन्नआदिदुखताहिनहोई ॥ विश्वभरनपोषनकरजोई । ता कर्नामभरतअसहोई ॥ जोउत्सवचहविविधप्रकारा । करुयहचौपाईअनुसा रा ॥ जबतेरामव्याहिघरआये । नितनवमंगलमोदवधाये ॥ जोचाहोजगमहँज

यभाई । स्थिरह्वैजपुयहचौपाई ॥ सखाधर्ममयअसरथजाके । जीतनकहँ नकतहुँरिपुताके ॥ हैंबहुभांतिकार्यजगमाहीं । रामायणसोंसबह्वैजाहीं ॥ दोहा॥सकलभांतिमनकामना, यहदोहादातार ॥ रामायणमहँखोजिकरि, करुयाकोअनुसार ॥ १३ ॥ वहशोभाजुसमाजसुख, कहतनबनैखगेश ॥ वरणैशारदशेषपुनि, सोरसजानमहेश ॥ चौपाई ॥ वर्णौएकरुचिरइतिहासा । तुलसीदासजोकीनतमासा ॥ द्राबडअरुकाशीमहिपाला । कहुँएकत्ररहेकछुकाला ॥ अतिशयप्रीतिबढीदुहुँमाहीं । मनमेंकपटलेशकछुनाहीं ॥ गर्भवतीदोऊनृपनारी । चलीबातदुहुँहुनकाहिडारी ॥ द्राबडकहीबातसुखरासी । सुनहुनृपतिकाशीकेवासी ॥ जन्मैंतवसुतसुताहमारे । अथवाममसुतसुतातिहारे ॥ असमंयोगहोइजोनार । हमतुम [illegible]हैंबिवाहउछाहू ॥ सोहैं[illegible]तहढाई । संततप्रीतिरहीअ[illegible]

सुखदसमयआयोजबकोऊ । निजनिजभवनगयेनृपदोऊ ॥ सोरठा ॥ कन्याभइदुहुँओर, जानीजातनदैवगति ॥ कहिपठयोसुतमोर, द्रवडदूत काशीगये ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ यहछलहोतभयोजिहिलाई । सोवहहेतु कहौंमैंगाई ॥ द्रावडपतिनिजगृहआयोजब । रानीसो असकहतभयो तब ॥ जोहोईकन्यादुहुँओरा । तोमैंप्राणतजबबरजोरा ॥ सुनिरानीरा जामुखवानी । मनमहँ बहुतभांतिभयमानी ॥ उपरोहितकोलिहिसिबुलाई । नृपदुराययहबातबुझाई ॥ ममअहिवाततुम्हारेहाथा । नहिंतौप्रभुमैं होबअनाथा ॥ रानीद्रव्यदीन्हनहिंथोरी । भइमायावशाद्विजमतिभोरी ॥ सेवकसेवकायनवशकीन्हेसि । आदरमानदानबहुदीन्हेसि ॥ दोहा ॥ सेवकएकदानतेहिं, वाराणसीबसाय ॥ तेहितेपाइसिखबरिसब, तबयहाकिहिसिउपाय ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ पुत्रनामधरिगुप्तरखायो । द्राद

शवर्षनद्वारादिखायो ॥ विदुषनकहेउनकोऊपोषे । व्याहसमयसवकोऊदे
खे ॥ मित्रमिलनाहितचितअनुराग्यो । नेगीपठैव्याहपुनिमाँग्यो ॥ अति
आनंदचल्योमगवेगी । काशीनृपपहँआयेनेगी ॥ नृपमनमुदितपत्रिकावां
ची । लैआवौवरातरँगराची ॥ आयोव्याहनद्रावडराजा । खुलीबातउप
जीअतिलाजा ॥ क्रोधातुरकाशीअवनीशा । कहकटिहौंद्रावडकरशी
शा ॥ यहसुनिद्रावडअधिकडरानेउ । निजछलसमुझिसमुझिपछितानें
उ ॥ दोहा ॥ अतिसभीतअतिदीनह्वै, गयोजहँतुलसीदास ॥ पाहिपाहिक
हिपाँयपरि, कहेउकरौदुखनास ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ तबकाशीनृपकहँ
बुलवायो । तुलसिदाससहितकरसमुझायो ॥ सुतकाहिसुताजोव्याहनआयो ।
होयपुत्रतौहोयवधायो ॥ जोयहपुत्रहोयमहराजा । करहिंविवा
[illegible]जा ॥ तुलसीदासवोदि[illegible] । तहँगणेशगवरीपधराई ।

नपैधरिरामायण । नवदिनभरकीन्हीपारायण ॥ जोकन्यावरवेषवतायो । ताहीकोसन्मुखबैठायो ॥ वक्ताआपसोश्रोताभई । दुनियातहँदेखनसब गई ॥ कथासकलजबबाँचिसुनाई । तासुशीशकरधरेउगोसाँई ॥ दोहा ॥ अरुयहचौपाईपढी, रामसुमिरिप्रसन्य ॥ तिहिअवसरवरह्वैगयो, श्रीरामायणधन्य ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ मंत्रमहामणिविषयव्यालके । मेटत कठिनकुअंकभालके ॥ रामायणजबकहीगुसाईं । प्रगटनाहतकाशीफिरआई ॥ आदरकीन्हनपंडितकाऊ । कहैंजोहमसोकरौउपाऊ ॥ जहँ स्थानकहैंतहँजाहू । पोथीअबनदेखावहुकाहू ॥ श्रीआनंदकान्हब्रह्मचारी । हमाशिरमौरसुमहिमाभारी ॥ जोयाकोवैआदरकरिहैं । तोहमसबलैशीशहिधरिहैं ॥ गयेआनंदकान्हपहँतत्पर । करतप्रशंसप्रसन्नपरस्पर ॥ पोथीकीचर्चापुनिकीन्ही । देखनहेतुमोलैधरिलीन्ही ॥ कछुदिनपढीसहि

तअनुरागन । गयेगोसाईंपोथीमाँगन ॥ दोहा ॥ पोथीदइअरुअसकहेउ,
होईआदरलोक ॥ निजप्रमाणकरिलिखिदियो, यहअद्भुतश्लोक ॥ १७ ॥
श्लोक–आनंदकाननेह्यस्मिन् जङ्गमस्तुलसीतरुः ॥ कवितामञ्जरीयस्या
रामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥ छंद ॥ धनिधन्यतुलसीदासजिनजगहेतुरामा
यणभनी । माहात्म्यअमितनकहिसकौंरसविषयमहँमोमतिसनी ॥ निज
बुद्धिकेअनुसारकहीगोपालसद्गुरुकीदया । रघुवीरयशकीअधिकताश्री
संतजनकरिहाहिंमया ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्रीमततुलसीदासजी, हैप्रसन्न
वरदेहु ॥ रामायणमाहात्म्यसों, हरिजनकरहिंसनेहु ॥ १८ ॥ संवतव
सुनभनंदकू १९०८, मार्गशुक्लगुरुवार ॥ एकादशिकहँकीन्हहै, अपनी
मतिअनुसार ॥ १९ ॥ रामकोटश्रीअवधपुर, स्वामीरामप्रसाद ॥ ति
नकीमहिमाकोकहै, विश्वविदितमरयाद ॥ २० ॥ तिनतेगादीपांचई,

सोस्वामीमैंदास ॥ लषणपुरीममजन्मक्षिति, रामनगरकेपास ॥ २१ ॥
भोजनगरपरसिद्धद्विज, उत्तमपूरणदास ॥ तस्यात्मजगोपालकृत, यह
माहात्म्यइतिहास ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीगोपालदासकृतरामायणमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीका–

जीवनचरित्र ॥

दोहा–वेङ्कटेशपदपद्म नमि, उरधर तुलसीदास ॥
जन्मचरित वर्णन करूं, सुनतहोत दुखनाश ॥ १ ॥

सोरठा–वंदौंसीताराम, विमल चारुपद कमलयुग ॥
जेहि प्रभाव त्रैधाम, पूरित तुलसीके चरित ॥ १ ॥
जगतभयो नहिं कोय, गोस्वामी तुलसीसरिस ॥
दियो अधर्महि खोय, रामायण रचि सुरसरी ॥ २ ॥
आदि अंत लगि तासु, तुलसीदास चरित्रको ॥
रसना करन विकासु, मेरे शक्ति कछू नहीं ॥ ३ ॥
पैविंसति इतिहास, प्रियादास नाभा कथित ॥
सतमुख कछुक प्रकाश, तौनरीति वर्णन करौं ॥ ४ ॥
चौ०राजापुर यमुनाके तीरा ❀ तुलसी तहां बसै मतिधीरा ॥
पंडित सकल शास्त्र विज्ञाता ❀ विद्यामें विश्वास अघाता ॥

भोविवाह आई जब नारी ❀ तासों अतिशय नेह पसारी ॥
आयो तियहि लेवावन भाई ❀ करी न तुलसी तियहि बिदाई ॥
नैहर हित तिरिया बिरझानी ❀ तदपि नकह्यो तासु कछु मानी ॥
आप गये कछु काज बजारा ❀ तब भाईलै भगिनि सिधारा ॥
आये पुनि तुलसी जब गेहू ❀ बिकल भये तिय बिन वशनेहू ॥
वर्षन लगो मेह अधराता ❀ बाढ्यो यमुन प्रवाह अघाता ॥
भैविभावरी भूरि अँधेरी ❀ करहु पसारे परत न हेरी ॥
अर्द्धरात्रि तेहि काम सतायो ❀ चल्यो श्वशुरगृह तिय मन लायो ॥
बढ्यो यमुनकर बडो प्रवाहा ❀ पैरि पर्‍यो नहिं भैतुरमाहा ॥
अर्द्ध निशा गो श्वशुर दुवारा ❀ लगे रहैं चहुँवोर किवाँरा ॥

दोहा–गयो पछीती चढनहित, झूलत रहै भुजंग ॥
ताहि पकरि ऊपर गयो, रँग्यो कामके रंग ॥ २ ॥

चौ०जाय नारि ढिग दियो जगाई ❀ प्रथमैं रही नारि चौआई ॥
चीन्हि बहुरि शंका अति कीन्ही ❀ गिरा बाण सम सोहनि दीन्ही ॥
धिगधिगधिगतोहिं प्राण पियारे ❀ चाम हाड अति निरत हमारे ॥
ऐसो मन जो लागत रामै ❀ तौ सुधरत तिहरे सब कामै ॥
नारि बैन शर सम उरलागे ❀ पूरव सकल पुण्यफल जागे ॥
तुलसिदास कह मानि गलानी ❀ हँसति हँसति तियतुव वानी ॥
बहुरे तुरत मूककी नाईं ❀ गेकाशी तजि भवन गोसाईं ॥
विनती किय विश्वेश्वर पाहीं ❀ राम भक्ति दीजै मोहिं काहीं ॥
शूकर क्षेत्र गयो पुनि सोई ❀ गुरू कियो तहँ अति मुदमोई ॥

गुरुको अतिसेवन तहँ ठायो ❋ रामायण अध्यात्महि पायो ॥
तुलसिदास आये पुनि कासी ❋ भेअनन्य रघुनाथ उपासी ॥
भजन करत बीत्यो बहुकाला ❋ भेप्रसन्न तापर शशिभाला ॥

दोहा–रामायण जहँ होय तहँ, सुनन हेतु नित जाय ॥
कथा समापत ह्वैगये, तहाँ न पुनि ठहराय ॥ ३ ॥

चौ०बाहिर भूमि हित दूरिहि जाहीं ❋ लिये कमंडलु यक करमाहीं ॥
शौच क्रिया कर बचै जो नीरा ❋ बदरी तरु डारै मतिधीरा ॥
रहै येकतेहि प्रेत पुरानै ❋ अशुचि नीर लहि सो सुखमानै ॥
यहि विधि बीति गयो कछु काला ❋ यकदिन बोल्यो प्रेतकराला ॥
तोपर अहौं प्रसन्न गोसांई ❋ मांगै अब अपनी मनभाई ॥
तब सुनि तुलसिदास कहबानी ❋ अहौ कौन तुम परै न जानी ॥

सो भाष्यो जानहु मोहिं प्रेता ❋ यहि बदरीतरु मोर निकेता ॥
यहिपर जौन सलिल तुमडार्‍यो ❋ मैं निज सेवा ताहि विचार्‍यो ॥
तुलसीदास कहा तुम प्रेता ❋ प्रेत कहा मनुजन कहँ देता ॥
जानन चहौ जो मम मनकेरी ❋ तौ सुनिये मैं कहौं निवेरी ॥
जो रघुवीर दरश मैं पाऊं ❋ जियत प्रयंत तोर यश गाऊं ॥
और कछू मेरे नहिं आसा ❋ कह्यो प्रेत तब भरो हुलासा ॥

दोहा-रामदरश करवायबो, मोर जोर कछु नाहिं ॥
पैसहाय हित कछु कहौं, यह उपाय तुमकाहिं ॥४॥

चौ०जहँ रामायण सुननसिधारो ❋ सबके पाछे जाहि निहारो ॥
अति निरधनी दुखी अतिदीना ❋ पूरित रोग नयनते हीना ॥
उठै सकल श्रोतनके पाछे ❋ मंद चलत चिरकुट कटि काछे ॥

सोहै सांचो पवन कुमारा ❀ तेहि रामायण सुनब अहारा ॥
नेम पवनसुत असनित धरहीं ❀ श्रवण सदा रामायण करहीं ॥
मिलै तुम्हैं कौनहू उपाई ❀ रामदरशकी करैं सहाई ॥
प्रेत वचन सुनि तुलसीदासा ❀ उरमें उमँग्यो अमित हुलासा ॥
ताहि गुरू गुनि भवन सिधारे ❀ कथा सुननहित तुरत पधारे ॥
कथा सुनत तहँ लख्यो प्रवीना ❀ अतिकुरूप तनु छाम मलीना ॥
दूरी बैठो आंधर ऐसो ❀ नयनो लख्यो प्रेतकहँ जैसो ॥
हैगै कथा समापत जबहीं ❀ श्रोता चले भवन कहँतबहीं ॥
रहे बार कछु बैठ गोसाईं ❀ चल्यो पवनसुत जडकी नाईं ॥
दोहा-तुलसीदास एकांत लहि, दौरि गह्यो पदजाय ॥
छाड़ु छाड़ु मोहिं मतिछुवै, सो अस कह्यो सुनाय॥८॥

चौ०तुलसी कह्यो छुटनना पैहौ ❀ लैहौ प्राण दरशकी दैहौ ॥
कियो छोडावन विविध उपाई ❀ चपरि गह्यो तुलसी वरियाई ॥
भेप्रसन्न तव पवन कुमारा ❀ मांगुमांगु अस वचन उचारा ॥
तुलसिदास कह रूपदेखावहु ❀ मेरे शीश पाणिनिज लावहु ॥
मेरे और कछू नहिं आसा ❀ होन चहौं रघुपति करदासा ॥
रामदरश मोहि देहु कराई ❀ तुमसमर्थ सब विधि कपिराई ॥
तव मारुत निजरूप देखायो ❀ तुलसिदास कहँ वचन सुनायो ॥
चित्रकूट कहँ चलहु प्रवीना ❀ पैहो राम दरश सुखभीना ॥
असकहि कपि निजरूप दुरायो ❀ तुलसिदास निजआश्रम आयो ॥
कछुदिनमें मनमहँ अस भयऊ ❀ अबै न शिवदरशन हैगयऊ ॥
गयो विश्वेश्वर नाथमंदिरै ❀ लखन रूप चह चूडचंदिरै ॥

पैनाहिं दरशन दियो पुरारी ❀ तुलसिदास तजि आश सिधारी ॥

दोहा—चित्रकूटकहँ चढचल्यो, पुरके बाहिर आइ ॥
मिल्यो येक महिसुर तहाँ, बोल्यो वचन बोलाइ ॥ ६ ॥

चौ० काशी छोंडि अनत मति जाहू ❀ इतते गये न तोर निवाहू ॥
तुलसिदास कह किय सेवकाई ❀ भेप्रसन्न नहिं शंभु गोसाईं ॥
सोकह सत्य शंभुमैं अहहूं ❀ काशी छोंडि अनत नहिं रहहूं ॥
असकहि हरनिजरूप देखायो ❀ तुलसिदास चरणन शिरनायो ॥
बहुरि वचन बोल्यो कृतिवासा ❀ चित्रकूट चलु तुलसीदासा ॥
कह्यो पवनसुत हँसतसोई ❀ रामदरशपै है मुदमोई ॥
रचिहै रामायण सुख श्रेनी ❀ अधम उधारन यथा त्रिवेनी ॥
तुलसिदास तब भयो निहाला ❀ चल्यो चित्रकूटहि तेहि काला ॥

शंकर अपनो रूप छिपायो ❀ तुलसी चित्रकूट कहँ आयो ॥
फटिक शिलापर बैठे जाई ❀ राम लषण लालसा बढाई ॥
ताही समय तुरंग सवारे ❀ कढे शिकारी द्वैधनु डारे ॥
रपटत मृगन शरन कहँमारे ❀ हरित वसन सुंदर तनुधारे ॥

दोहा—जानि शिकारी भूपसुत, राम राम कहिवैन ॥
तुलसिदास पछितायके, मूंदि लियो दोउ नैन ॥ ७ ॥

चौ० निकसि गये जब युगल सवारा ❀ आय कह्यो तब पवन कुमारा ॥
प्रभुदरशन पायोकी नाहीं ❀ दोऊ राम लषणते आहीं ॥
तुलसिदास कह जानि शिकारी ❀ हाय नयनमैं लियो निहारी ॥
अबै न पूरभई अभिलाषा ❀ जैसो पवनतनय तुम भाषा ॥
तब हनुमान कह्यो असवानी ❀ रामघाट चलु कालिहविज्ञानी ॥

भोरभये तब तुलसीदासा ❀ रामघाट गो भरो हुलासा ॥
गारन लग्यो न्हाय तहँ चंदन ❀ आयगये दोउ दशरथ नंदन ॥
कह्यो देउ चंदन मोहिं बाबा ❀ तुलसिदास तब सहजहि गावा ॥
चंदन देहुँ चराचि अंगमाहीं ❀ राम लषण तुमहोकी नाहीं ॥
बालक कहे साधु जगजेते ❀ राम लषणकी मूरतितेते ॥
दैचंदन दोउ बालसिधारे ❀ पाछे पवन कुमार पधारे ॥
बोले वचन दरश तुमपाये ❀ तुलसिदास यह दोहा गाये ॥

दोहा–चित्रकूटके घाटमें, भैसाधुनकी भीर ॥
तुलसिदास प्रभु चंदनघिसै, तिलक करै रघुबीर ॥८॥
बहुरि कह्यो करजोरिकै, सुनिये पवनकुमार ॥
देखौं चारौं बंधुको, सहित राजसंभार ॥ ९ ॥

चौ॰पवन तनय कह कलियुग माहीं ❋ असदरशन होते कहुँ नाहीं ॥
तुलसिदास कह कृपा तिहारी ❋ मोहिंन अचरज परत निहारी ॥
कह कपीश कामना सिधारी ❋ बैठहु कालिह राम उरधारी ॥
असकहि कपि अंतर्हित भयऊ ❋ भोर होत तुलसी तहँ गयऊ ॥
बैठ्यो युगुल पहर परयंता ❋ आयो दरश देन सियकंता ॥
धनद दिशा रहि धूरि सुपूरी ❋ भोप्रकाश दश आसहुभूरी ॥
अगणित मत्त मतंग तुरंगा ❋ सोतहँ विविध भांति रथसंगा ॥
बोलत बहुनकीब गणसोरा ❋ याको कोशल कंत किशोरा ॥
रथसवारप्रभु चारिहु भाई ❋ करत पवन सुत पदसेवकाई ॥
तुलसिदास तब आरति साजा ❋ लख्यो नयनभरि रघुकुल राजा ॥
दै परदक्षिण विह्वल भयऊ ❋ रघुपति करपंकज शिर दयऊ ॥

यहि विधि प्रगट दरश तब पायो ❀ औरनको नहिं भेद लखायो ॥

दोहा–यहिविधि तुलसीदासप्रभु, श्रीहनुमान सहाय ॥
रामदरश पायो प्रगट, रह्यो सुयशजगछाय ॥ १० ॥
रामउपासक अति अमल, नाशक जगजनत्रास ॥
हियेहुलासी वासकिय, काशी तुलसीदास ॥ ११ ॥
प्रगट्यो महामहत्व तहँ, जुरै रोज जनभीर ॥
पऱ्यो रहै चरणननृपति, आवैं बुधमतिधीर ॥ १२ ॥

चौ०कछुदिन किय काशी महँ वासा ❀ गये अवधपुर तुलसीदासा ॥
तहँ अनेक कीन्हो सतसंगा ❀ निशिदिन रँगे रामरतिरंगा ॥
सुखदराम नौमी जबआई ❀ चैतमास अति आनँदपाई ॥

संवत सोरहसै यकतीसा ❋ सादर सुमिरि भानुकुल ईसा ॥
वासर भौम सुखित चित चायन ❋ किय अरंभ तुलसीरामायन ॥
बालकाण्ड तहँ पूरन करिकै ❋ आये पुनि काशी सुखभरिकै ॥
विनय आदि गीतावलिग्रंथा ❋ रचे रुचिर सूचक युतपंथा ॥
वाराणसी बस्यो सुखछायो ❋ एक प्रबल पंडित तब आयो ॥
काशी जीतनको मन कीन्हे ❋ बजवावत दुंदुभी प्रवीने ॥
काशिराज तब सभा बोलायो ❋ सबपंडितन समाज करायो ॥
तब जो काशी जीतन आयो ❋ सोपंडित अस वचन सुनायो ॥
एक मुख्य सबमें करिदीजै ❋ हार जीत ताके शिरकीजै ॥
दोहा-पंडितको अस बैन सुनि, काशीवासी विप्र ॥
मानि महाभ्रम चित्तमें, कहे वचन अति छिप्र ॥ १३ ॥

चौ० उत्तरदेव कालिह यहि केरो ❀ असकहि गे द्विज निजनिज डेरो ॥
कियो ध्यान विश्वेश्वर अयना ❀ मर्यादा तुव हाथ त्रिनयना ॥
राति स्वप्न शंकर असभाषो ❀ तुलसी शीश अजय जयराषो ॥
पंडित मुदित भूप गृह आये ❀ सोपंडितसूं वचन सुनाये ॥
तुलसिदास सब माहिं प्रधानो ❀ जयहु पराजय तेहिं शिर आनो ॥
भूपकह्यो किमिसकै बोलाई ❀ तुलसिदास गृह चलो सिधाई ॥
यह सुनि लै पंडितन समाजा ❀ आयो तुलसिदास गृहकाजा ॥
सबनि कियो सत्कार गोसाई ❀ येक शिष्यको कह्यो बोलाई ॥
ये तांबूल पांचलै जाहू ❀ देहु मुदित पंडित सबकाहू ॥
शिष्य तुरत तांबूलहि बांटा ❀ बचे पांच कोहु पर्योनघाटा ॥
यह प्रभुता लखि पंडितसोई ❀ वादक नरकी आश्रय खोई ॥

तुलसिदास पंडितहि बोलाई ❋ दै रामायण कह्यो बुझाई ॥

दोहा-खंडन मंडन पक्षजो, सो देखहु यहि माहिं ॥
जो नहोय तौ आइइत, वादकरहुहमपाहिं ॥ १४॥

चौ०पंडित रामायण लैलीन्हो ❋ डेरा चलि अवलोकन कीन्हो ॥
सम्मत शास्त्र पुराणन केरो ❋ रामायण महँ पंडित हेरो ॥
जौनपक्ष पंडितमन भयऊ ❋ समाधान तेहिमहँ मिलिगयऊ ॥
जौनश्लोक वंदना माहीं ❋ ताकी हानि भई कछु नाहीं ॥

श्लोक-नानापुराणनिगमागमसंमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति ॥ १ ॥

चौ॰ पंडित गृह परिकम्र्मादयऊ ❀ तुलसिदास पदरज शिरधरयऊ ॥
निज अपराधहि क्षमा करायो ❀ सभा मध्य श्लोक सुनायो ॥

आनन्दकानने कोपि तुलसीजङ्गमस्तरुः ॥
यत्काव्यमञ्जरीभावाद्रामभ्रमरभूषितः ॥ २ ॥

चौ॰ तुलसी शिष्य भयो पुनिसोई ❀ अरप्यो सकल वस्तु बहु तोई ॥
रामभक्तिको करि उपदेशा ❀ गयो गर्व तजि कौशलदेशा ॥
पुनि चेटकी एक तहँ आयो ❀ एक यक्षिनी सिद्धि करिल्यायो ॥
तेहिबल सबथल नगर पुजायो ❀ महामहत्व जननसों पायो ॥
यक वैष्णव कोउ गयो सकामा ❀ राख्यो सिद्ध ताहि निजधामा ॥
सिद्धनारिसों भई मिताई ❀ साधु गयो लै ताहि पराई ॥

दोहा—उठ्यो चेटकी भोरजब, लख्यो नारि नहिं धाम ॥
बोलि यक्षिनीको तुरत, कीन्हो कोप अछाम॥१५॥

चौ॰ यहिक्षण नगर भूपगहि ल्यावै ❋ साधुनारि लै जानन पावै ॥
सुनि यक्षिनी तुरंतहि धाई ❋ युतपरयंक भूपगहि ल्याई ॥
कह्यो यक्षिनी भूपहि वैना ❋ काशी महँ कोउ साधुरहैना ॥
तिलक धोवाय मालसबटोरी ❋ धरि दीजै मम कुंड बटोरी ॥
जो असकरिहौ नरपति नाहीं ❋ तौ जानौ घर यमपुर माहीं ॥
नरपति कह्यो भवन पहुँचावहु ❋ कालिहहिते निज हुकुम करावहु ॥
तुरत भवन भूपहि पठवायो ❋ भोर भूप शासन प्रगटायो ॥
साधुन गलकंठी सब टोरी ❋ धोय तिलक करिकै बरजोरी ॥
सिद्धकुंड दीजै पहुँचाई ❋ दूजी बात न बनै बनाई ॥

यह सुनि नृपदल कियो तयारी ❀ धोवन लगे तिलक लै वारी ॥
टोरि टोरि कंठी बहुतेरी ❀ भर्‍यो सिद्धके कुंडहिटेरी ॥
हाहाकार मच्यो सबकाशी ❀ भये संत सब जीव निराशी ॥
दोहा–कह्यो धूर्तकोउ जायकै, तुरत चेटकी काहिं ॥
तुलसिदास माला तिलक, तुमटोरौ कतनाहिं ॥ १६ ॥
चौ०सुनिचेटकी सैन सब साजे ❀ चल्यो कोपि बजबावत बाजे ॥
नगर लोग सब देखन धाये ❀ कोउ वैष्णव तुलसी ढिगगाये ॥
माला कंठी टोरन हेतू ❀ आवत किये चेटकी नेतू ॥
तुलसिदास तब गिरा बखानी ❀ जाकर माल तिलक सोजानी ॥
जब चेटकी कुटी नियरायो ❀ तब यक घोर बडेररआयो ॥
परी फौज उडि सुरसरि माहीं ❀ रही चेटकी तनु सुधिनाहीं ॥

रुधिर वमत बूडत मधिधारा ❀ जस तस कैसो लग्यो किनारा ॥
त्राहि कहत तुलसी पदगिरेऊ ❀ मैं अजान संतनसों भिरेऊ ॥
क्षमा करहु अपराध हमारा ❀ तुलसी करुणा पारावारा ॥
वचन कह्यो मुसकाइ गोसाईं ❀ संत सेउ लघु जनकी नाईं ॥
खाहु वर्षभरि साधुन जूंठो ❀ तवह्वै हौ शुचि हैनहिं झूंठो ॥
कियो चेटकी तैसहि आई ❀ तरी यक्षिनी संगति पाई ॥

दोहा-संत चरण जलपान करि, साधु जूंठ नित खाय ॥
भयो चेटकी रामको, दास सुवास विहाय ॥१७॥

चौ०भई रामनौमी यककाला ❀ जुरीकुटी महँ संतनमाला ॥
उत्सव कियो महासुख छायो ❀ सिगरी राज्यविभूति बोलायो ॥
भई भीर भारी तेहिठामा ❀ छाय रह्यो यक रामहिनामा ॥

तहँ यक डोम अवधपुर केरो ❀ आयो तुरत उछाह घनेरो ॥
महाभीर वश दर्शन पायो ❀ जन्म मनोरथ बोलि सुनायो ॥
तुलसिदास पहँ कोउकह आई ❀ तुरत गयो प्रभुकाज विहाई ॥
पूछ्योहेतु कहांको वासी ❀ सो कह कोशल नगरनिवासी ॥
अवधनिवासी सुनत कृपाला ❀ भरिआए दोउ नयन विशाला ॥
उर लगाय मिलि कुटी लै आई ❀ बार बार तेहि कह्यो बुझाई ॥
यह विभूतिकी प्रभु रघुराई ❀ जनि भाषियो अवधपुर जाई ॥
मैं चेरो रघुपति पदकेरो ❀ वाराणसीकसौं करि डेरो ॥
ऐसो है तुलसी परभाऊ ❀ कहे मोहिं नहिं होत अघाऊ ॥
दोहा–येकसमय श्रीअवधको, लैसँग संतसमाज ॥
नावहि नावहि चलत भे, नाव भराये साज ॥ १८ ॥

चौ० सरयू गंगा संगम जहँई ❀ पहुँचे जबै गोसाईं तहँई ॥
भूप घाट घाटी अनुग्रामा ❀ पूछयो तुलसी चारिहुं नामा ॥
कहे लोक चलिकै शिरनावत ❀ रामसिंह इत नृपति कहावत ॥
रामदास घाटी करनाऊं ❀ तथा रामपुर बाजत गाऊं ॥
रामघाट यह गुण्यो गोसांई ❀ लगत जगात इतै वरिआई ॥
विन कर दै कोउ जानन पावे ❀ तुमहुंको देव उचित इतभावे ॥
राम भये गुणि नाम सबनके ❀ सजलकोर भे प्रभुनयननके ॥
तुलसिदास बोले मुसकाई ❀ दै जगात है मोर जवाई ॥
सुन्यो गोसाई आगमराजा ❀ आयो तुरतहि सहित समाजा ॥
वंद्यो तुलसिदासपद कंजन ❀ लिय उपदेश कुमति हगअंजन ॥
विनय कियो भरि आनंदभारा ❀ होय नाथ इतही भंडारा ॥

मेरे कंठ देहु प्रभुकंठी ❀ कीजै मोहिं वसिद विकुंठी ॥

दोहा–तुलसिदास करिकै कृपा, भंडारा तहँ दीन ॥
भूपहु द्रव्य लगायके, अतिउत्सव तहँ कीन ॥ १९ ॥
तुलसिदास उपदेशते, भूप सहित सबदेश ॥
रघुपति भक्त अनन्यभो, सेयो संत हमेश ॥ २० ॥
तुलसिदासकी पादुका, धऱ्यो भूपगृहमाहिं ॥
इष्टदेवसम पूजिकै, पायो मोद सदाहिं ॥ २१ ॥

चौ॰ येकदिना निवसत तेहिकाशी ❀ येकचरित्र भयो सुखराशी ॥
भैरवनाथ प्रभाव अपारा ❀ सोमनमें अस कियो विचारा ॥
मोहिं गोसाईं पूजत नाहीं ❀ दरशाऊं प्रभाव यहिकाहीं ॥

असगुणि तुलसिदासके बाहू ❋ दुसहपीर प्रगट्यो प्रददाहू ॥
होतभई अति पीर तहांहीं ❋ छूटत जान्यो निजतनु काहीं ॥
जतन कोटि कीन्हो मतिधीरा ❋ तबहुं न मिटी बाहुकी पीरा ॥
तब बाहुकको रच्या गोसाई ❋ मिटिगै पीर स्वप्नकी नाईं ॥
भैरवपर कोप्यो हनुमाना ❋ भैरवसों शिववचन बखाना ॥
देहिं रामदासन दुखनाहीं ❋ तेमोहिं प्रियप्राणहुते आहीं ॥
स्वप्न तुलसीसों शिवभाष्यो ❋ मैंभैरवहि मुख्यगण राष्यो ॥
इनहूंको वंदन तुमकीजै ❋ मोरि प्रीति अतिशय गनिलीजै ॥
तुलसिदास तब आनँदपाई ❋ भैरवकी वंदना बनाई ॥

दोहा–रच्यो कबित्त उदग्र अति, बाहुक चौआलीस ॥
तासु प्रभाव प्रत्यक्षअति, अबलौं आंखिनदीस ॥२२॥

जो चौआलिस दिवस लगि, हनुमत मंदिर जाय ॥
पाठकरै बाहुक सुचित, बैठिसनेमसोहाय ॥ २३ ॥
तासु प्रेत बाधा सकल, तनकी मनकी पीर ॥
मेटिदेत मारुतसुवन, यह भाषैं मतिधीर ॥ २४ ॥

चौ०—येक समय तुलसी भंडारे * जुरी भेटजन दिये अपारे ॥
चोर चोरावनके हितआये * अर्ध निशा निज घातलगाये ॥
जबहीं चोरचोरावन आवै * द्वैबालक धनु शरलै धावैं ॥
यहि विधि सिगरी राति सिरानी * चोरन डरते कुमति परानी ॥
दौर चोर तुलसीके पाँयन * परे आय चितमें अतिचायन ॥
पूछ्यो कोबालक प्रभु दोऊ * इतैन आवन पावत कोऊ ॥

तुलसिदास पूछयो वृत्तांता ✽ चोर कहे सिगरे हैसांता ॥
धन्य धन्य कहि पुलकि गोसांई ✽ गहे चोर पांयन वरियाई ॥
ह्वैगे शिष्य तुरंतहि चोरा ✽ तुलसिदास उरभो दुखभोरा ॥
संपति धरब उचित इतनाहीं ✽ राम लषण ताकैं धनकाहीं ॥
धिगतेहि जेहिप्रभु परिश्रम भयऊ ✽ अबलौं मोर कपट नाहिं गयऊ ॥
असगुणि संपति दियो लुटाई ✽ करकरवाको पीन विहाई ॥

दोहा-काशीमें पुनि यकसमय, मऱ्योविप्रकोउयेक ॥
सती होनहित तासुतिय, बांध्यो जतन अनेक ॥ २५ ॥

चौ० न्हाय पहिरिपट नारियर लैकै ✽ चली देव दरशन सुखछैकै ॥
तुलसिदास आश्रमहूँ गवनी ✽ वंद्यो चरण विप्रकी रवनी ॥
ध्यान करत तहँ रहे गोसाईं ✽ बोले वचन सहजकी नाईं ॥

हो सौभाग्यवतीतैं नारी ❀ सुनि सहगामिनि गिरा उचारी ॥

साखी-दोहा-तुलसी आवत देखकरि, सती नवायो शीश॥
जब तुलसी ऐसे कह्यो, अमरचूड आधीश ॥ २६ ॥
पती हमारे चलिगये, हमहूं चलतविहाल ॥
तुलसी तुमरे वचनको, होसी कवन हवाल ॥ २७ ॥

चौ॰ सत्य करो अपनी प्रभुवानी ❀ सती होनहित अहौं पयानी ॥
लख्यो गोसाईं नयन उघारी ❀ किये हती तिय सती तयारी ॥
अपने वचन सत्यके हेतू ❀ गये जहां मृतदाहन नेतू ॥
नयन मूंदि दोउ भुजा पसारहु ❀ जय जय सीताराम उचारहु ॥
मृतक ओर चितई जो कोई ❀ आंधर सो विशेषके होई ॥

जनसमाजतै सहिसब कीन्हे ❀ सीताराम मुदित कहि दीन्हे ॥
जब सब बोले राम दोहाई ❀ मृतकहु बोल्यो हाथ उठाई ॥

दोहा—तुलसी मरा बोलाइकै, मस्तक धारचोहाथ ॥
हमतौ कछु जानैं नहीं, तुमजानो रघुनाथ ॥ २८ ॥
दौरिगह्यो तुलसीचरण, जैजै माच्यो सोर ॥
कोइक मूंद्यो नयन नहिं, भयो अंधतेहि ठौर ॥ २९ ॥

चौ०—गह्यो आयपद ताकी नारी ❀ हरहु नाथ यक आंखि हमारी ॥
येक आंखि पतिकी प्रभुदीजै ❀ अपनो वचन सत्य करिलीजै ॥
एवमस्तु कहि दियो गोसाईं ❀ तैसहि भयो तुरत तेहिठाईं ॥
पुनि काशीमहँ कौनेहु काला ❀ गोहत्या कहुं लगी कराला ॥

दियो कुटुंब तासु तबत्यागी ❀ आयो सो तुलसीपद लागी ॥
कह्यो जोरकर सुनहु उदारा ❀ लखै लोगनहिं वदन हमारा ॥
तुलसिदास बोले तबवैना ❀ राम कहे तनु पापरहैना ॥
हम कुटुंब सब देव मिलाई ❀ रामरामतैं कहु रटलाई ॥
तेहिमुख राम राम रटलागी ❀ तनुते गोहत्या द्रुतभागी ॥
तुलसी तासु कुटुंब बोलायो ❀ मंजुल वचन सबनसों गायो ॥
राम कहत गोवध अघभाग्यो ❀ याको वृथा सबै तुम त्याग्यो ॥
जेहिप्रतीति अब होय तिहारी ❀ सोकरिलेहु परीक्षा भारी ॥

दोहा–कह्यो कुटुंबी तासु सब, जो नंदी शिव भौन ॥
याके करको खाय कछु, तौसंदेहहै कौन ॥ ३० ॥

चौ०–तब विश्वेश्वर मंदिरमाहीं ❀ गये गोसाईं लैतेहिंकाहीं ॥

नंदीश्वरसों विनय सुनायो ❋ नाम प्रभाव तुह्मीं सबगायो ॥
राम नामको यथा प्रभाऊ ❋ तुमसमान कोउ जानन काऊ ॥
राम कहत जो अघरहि जावै ❋ तौ यहिकर प्रभु कछू न पावै ॥
असकहि कराद्विज करकृतपेरा ❋ धरि दीन्हों नंदीश्वरनेरा ॥
दैकिँवार बाहिर प्रभु बैठे ❋ कौतुक लखन जुरे जनतैठे ॥
लखैं किँवार खोलि जब जाई ❋ लीन्हों नंदी पेरा खाई ॥
यक मुखमहँ प्रतीति हित राख्यो ❋ काशी वासी जयजय भाष्यो ॥
लियकुटुंब सब ताहि मिलाई ❋ तुलसिदास महिमा मुखगाई ॥
येक समय पुनि तुलसीदासा ❋ कछुदिन कियो अवधपुर वासा ॥
येक विप्रबालक तहँ मरेऊ ❋ तुलसीचरण आयसो गिरेऊ ॥
लोकरीति तुलसी समुझायो ❋ ताके मनमें कछू न आयो ॥

दोहा–लोथि डारिकै सोगयो, तुलसिदासके द्वार ॥
खान पान संध्या न किय, तुलसी कियो खंभार ॥ ३१ ॥

चौ०-सुमिरन कीन्हो पवन कुमारा ❀ अहो नाथ तुम मोहिं अधारा ॥
हनूमान कह स्वप्ने आई ❀ येहिपर जम कीन्हे जबराई ॥
पैयाको हम अवशि जिऐहैं ❀ रामभक्तको शोक मिटैहैं ॥
असकहि जमपुर गयो कपीशा ❀ जमबोल्यो पद नावत शीशा ॥
जमपुर विप्र बालजिय नाहीं ❀ खोजि लेहु सिगरे पुरमाहीं ॥
खोज्यो कपि पायो नहिं जीवा ❀ तब जमपुरकरि कोप अतीवा ॥
सुमिरि रामपद महिमा सिगरी ❀ लियो लपेटि लंगूर सो नगरी ॥
बोल्यो जमसूं पवन कुमारा ❀ देहु जियाइ विप्रको बारा ॥
नातो तेहि सँग जमपुर जैहैं ❀ मम प्रभु तुवसम और बनैहैं ॥

तबजमभभरि कह्यो करजोरी ❋ भाग्य मिटावन शक्ति न मोरी ॥
श्लोक-लिखिताचित्रगुप्तेनललाटाक्षरमालिका ॥ तन्नचालयितुंशक्यम
सुरैस्त्रिदशैरापि ॥ ३ ॥ पुराणांतरे ॥ वायु सुवन तब कह मुसकाई ॥
यह सति रघुपति भक्तिविहाई ॥ तामें सुन जमराज प्रमाना ॥ कियो
सनातन वेदबखाना ॥ श्लोक ॥ यद्धात्रालिखितंभालेतन्मृषानैवजायते ॥
ऋतेश्रीरामदासानांप्रेमनिर्भरचेतसाम् ॥ ४ ॥

दोहा-तब जमराज डरायकै, लैद्विज बालक प्रान ॥
अरप्यो आइ कपीशको, राख्यो अपनो थान ॥ ३२ ॥

चौ०-दियकपीश द्विजपुत्र जियाई ❋ सकल अवधपुर बजीबधाई ॥
तुलसिदास अति आनँदपायो ❋ तहाँवसत कछु काल बितायो ॥
आयो एक वनिक पुनिकोऊ ❋ रामदरश लालच अति सोऊ ॥

तुलसिदाससों विनय सुनायो ❀ श्रीरघुवीर दरश चितचायो ॥
तुलसिदास तब कहमुसकाई ❀ यहतो बात महाकठिनाई ॥
सहजहि रामदरश नहिं होई ❀ कोटिन जनम जातहै खोई ॥
बनिक कह्योहै कौन उपाई ❀ तुलसिदास तब कह्यो बुझाई ॥
बरछी गाडि भूमिमहँ देहू ❀ तापर कूदहु तजि तनुनेहू ॥
यहिविधि दरश होइतौ होई ❀ और जतन कछु परै नजोई ॥
वनिक कह्यो यह तौ न असतिहै ❀ तुलसिदास कह साति साति सतिहै ॥
वनिक गाडि वरछी महिमाहीं ❀ चल्यो जाइ तरु कूदनकाहीं ॥
मरनभीति कूद्यो नहिं जाई ❀ बनिया बार बार पछिताई ॥

दोहा–कोउ क्षत्रिय तेहि पंथहो, लख्यो तमाशो जाइ ॥
कह्यो वनिकसों काह यह, वैश्य कह्यो सब गाइ ॥ ३३ ॥

चौ० क्षत्रिय कह्यो उतारि तुम आवहु ❀ कौन हेतु तन वृथा गवांवहु ॥
मोसों लेहु कछुक धनभाई ❀ करहु जाय रोजगार बनाई ॥
वनिक मानि क्षत्रियके बैना ❀ लैधन तुरत गयो निज ऐना ॥
क्षत्रिय लियो मनहि अनुमानी ❀ मृषा न तुलसिदासकी बानी ॥
तरुपर चढि कूद्यो बरछीपर ❀ ऊपरहि रोकि लियो तेहि रघुवर ॥
बजे नगर दुंदुभी अपारा ❀ भयो सुयश सिगरे संसारा ॥
तामें प्रमाण गोसाईंजीकी ❀ मैंलिखि देहौं सोईंनीकी ॥
"कौनिहुं सिद्धिकि बिन विश्वासा ❀ विनहरि भजन न भव भय नासा" ॥
यकदिन गुरुजू गये नहाने ❀ मज्जन हित जब नीर समाने ॥
तब यक तिय बिन वसन नहाती ❀ कह्यो लाजभरि सो बिलखाती ॥
करिमम ओर पीठि यहि ठांई ❀ ठाढो रहुतोहिं रामदोहाई ॥

तिय मज्जन करिकै घर आई ❀ तुलसिदास सुनि राम दोहाई ॥
रहे ठाढतेहि दिनतेहि ठाईं ❀ शपथ बहोरव तियविसराई ॥
भयो शोर सिगरे पुरमाहीं ❀ आई सो तिय बहुरि तहाहीं ॥

दोहा—तुलसिदाससों वचन कहि, राम शपथ तुम काहिं ॥
जाहु आपने भवनको, इतै काज कछुनाहिं ॥ ३४ ॥
तुलसिदास जलते निकसि, तब आयो निज भौन ॥
जलचर पगपल नोचिलिय, कियो नायक पद गौन ॥ ३५ ॥
रामशपथ यहि भांतिकी, ताहि मंदमति लोग ॥
रामद्रोहि भासत रहैं, करिकै मृषा प्रयोग ॥ ३६ ॥

चौ॰ तुलसिदास कर बढ्यो प्रभाऊ ❀ भयो विदित पुहुमी सब ठाऊ ॥

बादशाह दिल्लीको वासी ❋ सुनि कीरति अति आनँदरासी ॥
निजनायकको कह्यो बुलाई ❋ तुलसीको ल्याइये लेवाई ॥
नायक चल्यो बनारस आयो ❋ तुलसिदासके पदशिरनायो ॥
हजरत तुह्मैं बोलायोसाँई ❋ चल्यो दूत कहिकै तेहिठाँई ॥
तुलसिदास तब कियो विचारा ❋ कौन सहाते हेतु हमारा ॥
पैजो हम डिल्ली नाहिं जैहैं ❋ साह अवशि दरशन हित ऐहैं ॥
तौजीवनको अति दुख होई ❋ उचित परै चलिबो मोहिंजोई ॥
तुलसिदास लै साधु समाजा ❋ डिल्ली गये सुमिरि रघुराजा ॥
साह कियो सादर सतकारा ❋ पुनि बोल्यो अपने दरबारा ॥
तुमहि सुन्यो साहेबहि मिलापी ❋ अजमत देहु देखाय प्रतापी ॥
तुलसी कह्यो राम हम जाने ❋ दूसर साहेब और न माने ॥

दोहा—अजमत देखन हेततहँ, कीन्हो हठ शठ साह ॥
तुलसिदास अजमत करन, कियो न मनमें चाह ॥ ३७ ॥

चौ०साह सकोप कह्यो तब बानी ❋ तूखिलाफ अजमत अभिमानी ॥
कारागार कैद यहि कीजै ❋ राम करतकासो लखिलीजै ॥
सुनत साह शासन मजबूता ❋ कारागार गये लैदूता ॥
तुलसिदास तब कियो विचारा ❋ मोर सहायक पवन कुमारा ॥
सुमऱ्यो पदराचिकै हनुमाना ❋ सोपद श्रोता सुनहु सुजाना ॥

पद—ऐसो तोहिं नबूझिये हनुमानहठीले ॥
हांकसुनतदशकंधकेभयेवंदनढीले ॥

चौ०तुलसिदास यह पदरचि गायो ❋ तब हनुमत उर अमरष आयो ॥

होत भोर डिल्ली पुरमाहीं ❀ कोटिन मर्कट विकट देखाहीं ॥
कोट कंगूरन और हवेली ❀ कलशादियो अनेकनठेली ॥
शाखामृग यक यक घरमाहीं ❀ प्रविसत लखन तुरत देखाहीं ॥
लालकि लामधि साहम काना ❀ तहँ बांदरप्रविसे सहसाना ॥
तोपन तुपकन यद्यपि मारा ❀ तदपि कीश नहिं हटे हजारा ॥
घुसे कीश बहु साहजनाने ❀ पकरि बेगमनको अनखाने ॥

दोहा–फारि वसन पटहीन किय, चीथि चीथि सबअंग ॥
हाहाकार नचाय दिय, रँगे कोपके रंग ॥ ३८ ॥

चौ०रहैं जौन डिल्लीके वासी ❀ भये सकलते जीव निरासी ॥
लखिदुरदशा शाह घबराना ❀ सकल उजीरनको द्रुतआना ॥
शासन दीन्हो करहु विचारा ❀ केहिहित माच्यो जुलुम अपारा ॥

हाफिस वृद्ध रह्यो तहँ एका ❀ सोकह कीन्हो अति अविवेका ॥
यकफकीरको कैद करायो ❀ सो अपनी अजमत दरशायो ॥
करतशाहके यही विचारा ❀ डिल्ली माच्यो हाहाकारा ॥
यक यक पुरुष नारिपर कीशा ❀ लाखन लपटि गये कररीशा ॥
भागीं वेगम विनसुथनीया ❀ कहत खोदायन पगपैंजनिया ॥
नोचहिं नारिन केशन कीशा ❀ भागतगिरीं फूटिगे शीशा ॥
मातु सुता पितु सुत तजि भागे ❀ कोउ कोउ संग नलिय भय पागे ॥
डिल्ली प्रलय होति सोंदीसै ❀ हल्ला कियो महल्ला कीसै ॥
कारागार जाय तब साहा ❀ गिऱ्यो तुरत तुलसी पदमाहा ॥
दोहा-विनय कियो कर जोरिकै, अजमत लीन्हों देखि ॥
अब वानरन समेटिये, प्रलय होतिसी लेखि ॥ ३९ ॥

चौ॰ तुलसिदास कह अजमत देखौ ❋ रामचरित्र सकल जिय लेखौ ॥
जो चाहो आपनी भलाई ❋ तौफेरहु पुर रामदोहाई ॥
यहडिल्ली भोहनुमत थाना ❋ बसतु जाय रचि द्वितिय मकाना ॥
साहमानि शासन शिरनाई ❋ डिल्ली फेरचो रामदोहाई ॥
बंदरबंदभये जेहिं कालै ❋ तुलसीको ल्यायो निजआलै ॥
कियो गोसाईंको सतकारा ❋ डिल्ली दूसर रच्यो भुवारा ॥
रामघाट रचि यमुना माहीं ❋ डिल्ली अरपिसु तुलसी काहीं ॥
वस्यो सुचित चित बादसाहतहँ ❋ तुलसीको राख्यो तेहिपुर महँ ॥
सून्यो सूर कीरति तेहिभांती ❋ दरशन अभिलाषा अधिकाती ॥
पठै बुद्धि मानन ब्रजकाहीं ❋ आन्यो सूरदासपुर माहीं ॥
तुलसी सूर समागम भयऊ ❋ रामकृष्णमय पुरहै गयऊ ॥

दोऊ गये साह दरबारा ❋ बादसाह किय अतिसतकारा ॥

दोहा—साह कह्यो तब सूरसों, दीजै चरित देखाय ॥
सूरकह्यो तुलसी चरित, लखिनहिं गये अघाय ॥ ४० ॥

चौ०बेटी तुव जो बसै जनाने ❋ तासु चरित सुनिये दोउकाने ॥
कृष्णरासकी सखी सुहाई ❋ कौनेहु पाप भवन तुवआई ॥
ताहि पठावहु ब्रजैतुरंता ❋ रासकरत जहँ राधाकंता ॥
जोपरतीति होय नहिंतेरे ❋ तौमानिये वयन असमेरे ॥
तासु वाम जंघा तिलहोई ❋ मूरति श्याम कपोलहि जोई ॥
साह सुनत उठि गयो जनाने ❋ बेटीकोसो वचन बखाने ॥
सुनतहि सुता सूर ढिगआई ❋ दैतल मुखतनु दियो विहाई ॥
तासु जंघ तिल लख्यो अमोला ❋ श्यामस्वरूपहु लख्यो कपोला ॥

अचरज गुणि पूछ्यो तब सूरै ❀ हेतु बखानि हरहु भ्रमपूरै ॥
सूर कह्यो यह सखी रासकी ❀ मान कियो पिय मिलन आशकी ॥
मैंही गयो मनावन याको ❀ मान्यो नहिं मनायकै थाको ॥
तबमैं कह्यो वियोगिनि ह्वैहै ❀ सोउ कहतहूं वियोगहि पैहै ॥

दोहा–आयगये तहँ मिलन हित, तुरतहि मदन गोपाल ॥
करगहि जंघा धरिछ्छरी, चूमि कपोल विशाल ॥ ४१ ॥

चौ॰ लियो लेवाय मनाय प्रियाको ❀ जान्यो सबवृत्तांत तहाँको ॥
मोहिं कह्यो तैं प्रगट जगतमें ❀ तारै जनन विराजि भगतमें ॥
सखी होयगी साह कुमारी ❀ तोहिं मिलिहै तब तनु तजि डारी ॥
सोअमरषवश मोहिंतलभाग्यो ❀ तनु तजि यदुपति धाम सिधान्यो ॥
छरीचिन्ह जंघा तिलसोई ❀ चुंबन कीन्ह कपोलहि जोई ॥

साह सत्य गुणि अ... ❀ बाराहिबार सूरपग लागा ॥
रहे बहुत दिन ... ❀ करिसतसंग न मोद अघाई ॥
यकदिन दोउ बजार महँबैठ ❀ करि सतसंग मोद रसपैठे ॥
साह मत्त मातंग महाना ❀ आवत चलो दुहूँन दरशाना ॥
लोगन कह्यो पराव तुरंता ❀ नातो करन चहत गजअंता ॥
सूर कह्योमैं जाहुँ गोसाईं ❀ मैं रहिसकोंन अबयहि ठाईं ॥
मेरो नंदलाल अतिबालक ❀ किमि व्हैहैं दुरधर गजघालक ॥
तू बैठै तौबैठै भलाई ❀ धनुधर तेरो नाथ गोसाँई ॥

दोहा-भगेसूर असकहि तहां, लीन्हे अंक गोपाल ॥
तुलसिदास मुसकाइकै, बैठ सुमिरि रघुलाल ॥४२॥

चौ०-धायो तुलसी सन्मुख नागा ❀ आकस्मात शीश शरलागा ॥

मऱ्यो नागकारि घोर चिकारा ❀ भोवृत्तांत विदित संसारा ॥
तुलसी सूर समागम करिकै ❀ काशी आवत भेमुदभरिकै ॥
येकसमय नाभाजू ज्ञानी ❀ जिन यह भक्तमाल निरमानी ॥
तेसब संतन नेउता दीन्हो ❀ सिगरे संत पयानो कीन्हो ॥
तुलसिदासको न्योतो आयो ❀ तबमनमें विचार असलयायो ॥
पंगतिमें कच्चो पकवाना ❀ द्विजकोखैबो उचितनजाना ॥
यह विचार करि तहाँ नगयऊ ❀ पवन सुवनतासों कहि दयऊ ॥
भक्तराज नाभाको जानो ❀ तुरतहि तहँको करोपयानो ॥
हनुमत शासन सुनत गोसाईं ❀ चले तुरत भिक्षुककी नाईं ॥
नगर ओडछे ढिग तब गयऊ ❀ कौतुक तहाँ मांचियहरहेऊ ॥
तहँको इंद्रजीत जो राजा ❀ सो जोऱ्यो बहु कविन समाजा ॥

दोहा-कविसमाज शिरताज किय, श्रीकवि केशवदास ॥
रामचंद्रिका जो विमल, कीन्हो जगत प्रकास॥४३॥

चौ॰कविमंडली विलोकि नरेशा ❋ दीन्हो विप्रन नवल निदेशा ॥
यह सब कविमंडली सदाही ❋ रहै कौनविधि मम ढिगपाही ॥
मंत्रशास्त्र विधि कह असवानी ❋ प्रेतयज्ञ कीजै विधिठानी ॥
यहिविधिते यह कविन समाजा ❋ रहैं सहस वर्षहु लगि राजा ॥
इंद्रजीत तब अतिसुख पायो ❋ प्रेत यज्ञ विधि सहित करायो ॥
सोकवि मंडलि युत नरनाथा ❋ भये प्रेत तनु तजि यकसाथा ॥
रामचंद्रिका केशव कीन्हो ❋ पूरण भईन तनुतजि दीन्हो ॥
यहवृत्तांत सकल कोउ पाई ❋ तुलसिदासको दियो सुनाई ॥
सोइ कविकेशव वटतर माही ❋ अबलों करत पुकार सदाहीं ॥

रामचंद्रिकाको लेजाई ❀ ल्यावै तुलसीसों सोधवाई ॥
यहसुनि तुलसिदास तहँ गयऊ ❀ केशव कहत पुकारत भयऊ ॥
केशव तरुते उतरि तुरंता ❀ तुलसी पदपकर्‍यो हरषंता ॥
दोहा–नाथ उधारो मोहिं अब, ग्रंथ सुधारो सोय ॥
नाहिं बांच्यो मम कोउ कुमति, हार्‍यो बहुविधिरोय ॥ ४४ ॥
चौ० तुलसी कह्यो बिहंसि असबानी ❀ रामचंद्रिका पढ़ुसुख खानी ॥
केशव रामचंद्रिका पढेऊ ❀ तुलसी सुनि शोधत मुदबढेऊ ॥
रामचंद्रिका पूरी जबहीं ❀ केशवतर्‍यो जयति कहि तबहीं ॥
नाभा निकट गोसाईं गवने ❀ पंगति समय पहुंचि सुखसमने ॥
लखि नाभा कछु कह्यो भवानी ❀ लखन रीतितेहि सुमति लोभानी ॥
तुलसी बैठे पंगति छोरा ❀ परी पातरी नीचे ठोरा ॥

साधु उपानत पातरि नीचे ❀ धरि कीन्हो सम अति सुखसीचे ॥
नाभा निरखि भाव असताको ❀ मिल्यो जायकर गहिसुख छाको ॥
ताहिमध्य पंगति बैठायो ❀ बार बार चरणन शिरनायो ॥
कछुदिन कीन्हो तहां निवासा ❀ करिसतसंगहि लह्यो हुलासा ॥
नाभा तासु विमल मतिहेरा ❀ भक्तमाल महँ कियो सुमेरा ॥
पुनिव्रजमंडल यात्रा करने ❀ तुलसिदास गवन्यो सुख भरिने ॥

दोहा—नाभाजू छप्पै लिख्यो, भक्तमालमें जौन ॥
मैंसोई लिखि देतहौं, श्रोता समुझौ तौन ॥ ४९ ॥

छप्पै— त्रेता काव्य निबंधकियो सतकोटि रमायन ॥
एक अक्षर उच्चरे ब्रह्महत्यादि परायन ॥

अब भक्तन सुख देन बहुरि लीला विस्तारी ॥
रामचरण रस मत्तरहत अहनिशि व्रतधारी ॥
संसार अपारके पारको सुगमरूप नौका लयो ॥
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो १

दोहा–तुलसिदास यात्राकरि, ब्रजचौरासी कोस ॥
राम कृष्ण वपु भेदविन, भरि आनंद उरकोस ॥ ४६ ॥

चौ॰ बहुरि जबै वृंदावन आये ❀ घाट घाट मज्जन करिभाये ॥
सब मंदिरन दरश करिलीन्हो ❀ ज्ञानगूदरी डेरा कीन्हो ॥
परशुराम तहँ रह्यो महंता ❀ कृष्ण उपासक भाव करंता ॥
लख्यो गुसाईंकी सबरीती ❀ बढी करन सतसंगहि प्रीती ॥

तुलसिदासको करिसतसंगा ❀ नव नव बढत प्रेमरस रंगा ॥
परशुरामके मंदिरमाहीं ❀ कृष्णरूप श्रीनाथ सोहाहीं ॥
वंसी लकुट काछनी काछे ❀ मुकुट माथ माला उरआछे ॥
सोहति मूरति ललित त्रिभंगी ❀ हरनहार हिय राधासंगी ॥
यकदिन तहँ सब दिनकी नाईं ❀ दरशहेत चलि गए गोसाईं ॥
परशुराम तहँ रह्यो महंता ❀ तासुपरीक्षा चह्यो करंता ॥
तुलसी करन दंडवत लागे ❀ तब महंत बोल्यो अनुरागे ॥
मेरे वचन कछुक सुनिलेहू ❀ फेरि द्वार दंडवत करेहू ॥

दोहा—अपने अपने इष्टके, नमन करैं सबकोय॥
बिनइष्टके परशुराम, नवैसो मूरख होय ॥ ४७ ॥
परशुरामके वचन सुनि, मानत हिये हुलास ॥

सीतारमन सँभारिकै, बोल्यो तुलसीदास ॥४८॥
कहा कहौं छबि आजुकी, भले बनेहौ नाथ ॥
तुलसी मस्तक तब नवै, धरो धनुष शरहाथ ॥४९॥
मुरली लकुट दुरायकै, धऱ्यो धनुष शरहाथ ॥
तुलसी लखि रुचि दासकी, नाथ भये रघुनाथ ॥५०॥

चौ०यह प्रत्यक्ष देख्यो संसारा ❀ वृंदावन माच्यो जयकारा ॥
परशुराम तुलसी पदगहेऊ ❀ धन्य धन्य कहि आनँद लहेऊ ॥
यकादिन ज्ञान गूदरी माहीं ❀ होती हरिकी कथा सदाहीं ॥
गये गोसांई श्रवणउ माहा ❀ निरखे संत महंतन कांहा ॥
कोउगद्दीमहँ बैठ महंता ❀ कोउ उच्चासन महँ बिलसंता ॥

गद्दी महँ बैठावन लागे ❀ भूमहँ बैठि गये अनुरागे ॥
कह्यो गोसाईं सबन सुनाई ❀ कथा श्रवणके दोष गनाई ॥
कथा सुनत बीराजे खाहीं ❀ तेमल भक्षत नरकन माहीं ॥
कथा सुनत बैठें उच्चासन ❀ तेअर्जुन तरु होत पापसन ॥
कथा सुनहिंजे विना प्रणामा ❀ तेविष वृक्ष होत अघधामा ॥
कथासुनतजे सोवत जानी ❀ तेअजगर होते अभिमानी ॥
जेवाचक सम आसन बैंठे ❀ तेगुरु तल्प पाप फलपैंठे ॥

दोहा–जेनिंदैयदुपति कथा, अघ हरनी मनहारि ॥
ते शतजन्म प्रयंत लगि, श्वान होत दुखकारि ॥ ९१ ॥

चौ०कथा होतजे करैं विवादा ❀ तेखर सरट होत मरयादा ॥
जेहरि कथा सुनत शठनाहीं ❀ होत नरक लहि कोलवनाहीं ॥

कथा विघ्नकरतेजे द्रोही ❀ नरक भोगि पुर शूकर होही ॥
ये दशदोष तुरंत विहाई ❀ श्रीहरिकथा सुनहु सबभाई ॥
सुनिकै तुलसिदासके वैना ❀ भरिआये जल प्रेमिन नैना ॥
तुंगासन सब दियो विहाई ❀ बैठे भूमि कथा शिरनाई ॥
ह्वैगै कथा समापत जबहीं ❀ बोल्यो संत एक अस तबहीं ॥
षोडस कला कृष्ण सुखसारा ❀ द्वादश कला राम अवतारा ॥
षोडस तजि द्वादश कस भजहू ❀ समाधान करु नहिंघर व्रजहू ॥
यह सुनि तुलसिदास सुखछाके ❀ भये मिलनहारे वसुधाके ॥
रही दंडद्वै लगि सुधि नाहीं ❀ सींचे संत सलिल तिनकाहीं ॥
भई खबरि तब उठेगोसांई ❀ पूंछे संत भेद वरियाई ॥
दोहा-तुलसिदास बोल्यो वचन, यदपि कहब नहिंयोग ॥

तद्यापि कहहुँ प्रसंग वश, सुनहु भेद सबलोग ॥ ५२ ॥

चौ०रामहिजान्यों मैं लगि आजू ❋ अतिकृपालु कोशल महराजू ॥

तुमतौ बारहि कला बताये ❋ ईश्वरको अति भाव दृढाये ॥

महाराज पुनि ईश्वररामा ❋ अबकिमि तजौं तासुमैं नामा ॥

यह सुनि जानि अनन्य उपासी ❋ गहे चरण सब संतहुलासी ॥

यहि विधि करत विविध सतसंगा ❋ तुलसी विपिन वसे रतिरंगा ॥

पुनि कछु काल महाँ चलि कासी ❋ तुलसिदास आये सुखरासी ॥

विनयपत्रिका जौन बनायो ❋ ताको मंदिर मध्य धरायो ॥

विनयाकियो सन्मुख करजोरी ❋ सत्यहोय विनती जोमोरी ॥

तौयहि माँहि सही परजावै ❋ मोरदुसह दुख दुतामिटि जावै ॥

असकहि कीन्हो बंद कॅवारा ❋ गयो बहुरि जब भोभिनसारा ॥

तुलसी पुस्तक गहि जबहेरी ❀ मिली सही रघुपति करकेरी ॥
विनय माहँ तब पद यह कीन्हो ❀ सोमैं इतने सुकलिखि दीन्हो ॥

पद–तुलसी अनाथकी परि रघुनाथ हाथसहीहै ॥

दोहा–पुनि अतिदुस्तर काल लखि, रामधामको जान ॥
तुलसीदास विचार किय, बोल्यो सबन सुजान ॥ ५३
सहिन जात रघुपति विरह, जान चहौं हरिधाम ॥
यह सुनिकै अति व्यथितभे, सकल संत मतिधाम ॥ ५४॥
तिनहिं दियो उपदेश मम, ग्रंथ वेद मरयादि ॥
रामायण गीतावली, विनयपत्रिका आदि ॥ ५५ ॥
तिनहि सुनहु समुझहु सुरुचि, चलहु ग्रंथ अनुसार ॥

अंतसमय हठि मिलहिंगे, दशरथ राजकुमार ॥ ५६ ॥
असकहि सहजहि आयगे, असीवरुनके तीर ॥
नयन मूंदि तनु अचल किय, भई संतकी भीर ॥ ५७ ॥
बजे नगारे गगनमें, देखो परो विभास ॥
दामिनिसों चहुँ ओरमें, चमक्यो चपल प्रकास ॥ ५८ ॥
संवत सोरहसै असी, असी वरुनके तीर ॥
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ॥ ५९ ॥
भवसागरमें नावसम, विरचि ग्रंथ मतिधीर ॥
चढविमान गवनत भयो, जहँ निवसत रघुवीर ॥ ६० ॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीका जीवनचरित संपूर्णम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बरवारामायणप्रारम्भः ।

बरवाछन्द ।

केशमुकुत सखि मरकत मणिमय होत ॥ हाथलेत पुनि मुक्ता करत उदो-
त ॥ १ ॥ समसुबरन सुखमाकर सुखदन थोर ॥ सीयअंग सखि कोमल
कनक कठोर ॥ २ ॥ सियमुख शरदकमल जिमि किमि कहिजाइ ॥ निशि-
मलीन वह निशिदिन यह विगसाइ ॥ ३ ॥ बडे नयन कट भ्रुकुटी भाल-
विशाल ॥ तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥ ४ ॥ चंपकहरवा अँगमि-
लि अधिक सोहाइ ॥ जानिपरै सियहियरे जब कुँभिलाइ ॥ ५ ॥ सियतुव
अंगरंगमिलि अधिक उदोत ॥ हारबेलि पहिरावो चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु
सुशील सुमति शुचि सरलस्वभाव ॥ रामनीतरत काम कहाँ यह पाव ॥

॥७॥ कुंकुमतिलक भालश्रुति कुंडल लोल ॥ काकपक्षमिलि सखि कसलसत कपोल ॥ ८ ॥ भालतिलक शरसोहत भौंहकमान ॥ मुख अनुहरिया केवल चंद्रसमान ॥ ९ ॥ तुलसी वंकविलोकनि मृदु मुसकानि ॥ कस प्रभु नैन कमल अस कहौं बखानि ॥ १० ॥ कामरूपसम तुलसीरामस्वरूप ॥ कोकवि समसरकरै परै भवकूप ॥ ११ ॥ चढत दशा यह उतरत जात निदान ॥ कहउँ नकबहूं करक भौंह कमान ॥ १२ ॥ नित्य नेमकृत अरुण उदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृपमुख भये मलीन ॥ १३ ॥ कमठपीठ धनुसजनी कठिन अँदेस ॥ तमाकिताहि एतोरिहि कहब महेस ॥ ॥१४॥ नृप निराशभये निरखत नगर उदास ॥ धनुषतोरि हरि सबकर हरेउहरास ॥ १५ ॥ काघूँघट मुखमूँदहु नवला नारि ॥ चांदस्वर्गपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गरब करहु रघुनंदन जनि मनमाहँ ॥

देखहु आपनिमूरति सियके छाइ ॥ १७ ॥ उठी सखी हँसि मिसकरि कहि मृदुबैन ॥ सिय रघुबरके भये उनीदे नैन ॥ १८ ॥ सीकधनुष हितसिखन सकुचि प्रभु लीन ॥ मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसि दीन ॥ १९ ॥ इति श्रीबरवैरामायण बालकांड समाप्त ॥ १ ॥ सातदिवस भये साजत सकल बनाउ ॥ कापूछहु सुठि राउर सरलस्वभाउ ॥ २० ॥ राजभवनसुख विलसत सियसंग राम ॥ विपिन चले तजिराज्य सुविधिबडवाम ॥ २१ ॥ कोउकह नरनारायण हरि हर कोउ ॥ कोउकह विहरत बनमधु मनसिज दोउ ॥ २२ ॥ तुलसी भइमति बिथकित करि अनुमान ॥ रामलषणके रूप नदेखेउ आन ॥ २३ ॥ तुलसी जनि पगधरहु गंगमहँ साँच ॥ निगा नांगकरि नितहि नचाइहि नाच ॥ २४ ॥ सजलकठौता करगहि कहत निषाद ॥ चढहु नाथ

पगधोइ करहु जनिवाद ॥ २५ ॥ कमलकंटकित सजनी कोमल पाइ ॥ निशि मलीन यह प्रफुलित निति दरशाइ ॥ २६ ॥ (वाल्मीकिवचन) द्वैभुजकर हरि रघुवर सुंदरवेस ॥ एकजीभकर लछिमन दूसरशेस ॥ २७ ॥ इति श्रीबरवैरामायण अयोध्याकांड समाप्त ॥ २ ॥ वेदनाम कहि अँगुरिन खंडि अकास ॥ पठयो सूपनखाहि लषणके पास ॥ ॥ २८ ॥ हेमलता सियमूरति मृदु मुसुकाइ ॥ हेमहरिणकहँ दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥ २९ ॥ जटामुकुट करशर धनुसंग मरीच ॥ चितवनि वसति कनखियनु अँखियनु बीच ॥ ३० ॥ (रामवाक्य) कनकसलाक कलाशशि दीप सिखाउ ॥ तारासिय कहँ लछिमन मोहिं बताउ ॥ ३१ ॥ सीयवरणसम केतकि अतिहिय हारि ॥ किहेसि भँवरकर हरवा हृदय विदारि ॥ ३२ ॥ शीतलता शशिकीरहि सबजग छाइ ॥ अगिनि तापव्है हमकहँ सचरत आइ ॥ ३३ ॥ इति श्रीबरवैरामायण आरण्यकांड समा-

त ॥ ३ ॥ श्यामगौर दोउमूरति लछिमनराम ॥ इनते भइ सितकी रति अतिअभिराम ॥ ३४ ॥ कुजनपालगुणवर्जित अकुलअनाथ ॥ कहहु कृपानिधि राउर कस गुणनाथ ॥ ३५ ॥ इति श्रीबरवैरामायण किष्किधाकांड समाप्त ॥ ४ ॥ विरहआगि उरऊपर जब अधिकाइ ॥ एअँखियां दोउ वैरिनि देहिं बुझाइ ॥ ३६ ॥ डहकुन है उजियरिया निशिनहिं घाम ॥ जगतजरत अस लागुमोहिं बिनुराम ॥ ३७ ॥ अब जीवनकी है कपिआश नकोइ ॥ कनगुरियाके मुँदरी कंकन होइ ॥ ३८ ॥ रामसुयश कर चहुँयुग होत प्रचार ॥ असुरनकहँ लखि लागत जगअँधियार ॥ ३९ ॥ (कपिवाक्य) सियवियोग दुख केहिविधि कहउँ बखानि ॥ फूलबाणते मनसिज वेधत आनि ॥ ४० ॥ शरदचांदनी सँचरत चहुँदिशि आनि ॥ विधुहिं जोरिकर बिनवति कुलगुरु जानि ॥ ४१ ॥ इति श्रीबरवैरामायण सुंदरकांड समाप्त ॥ ५ ॥ विविध वाहनी विलसत सहित

अनंत ॥ जलधिसरिस कोकहै रामभगवंत ॥ ४२ ॥ इति श्रीबरवैरामायण लंकाकांड समाप्त ॥ ६ ॥ चित्रकूट पयतीरसो सुरतरुवास ॥ लषण राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४३ ॥ पय नहाइ फलखाहु परिहरियेआस ॥ सीय रामपद सुमिरहु तुलसीदास ॥४४॥ स्वारथ परमारथ हित एक उपाय ॥ सीय रामपद तुलसी प्रेमबढाय ॥ ४५ ॥ कालकराल विलोकहु होइ सचेत ॥ रामनाम जपु तुलसी प्रीतिसमेत ॥ ४६ ॥ संकटशोच विमोचन मंगलगेह ॥ तुलसी रामनामपर करि असनेह ॥ ४७ ॥ कलि नहिं ज्ञान विराग नयोग समाधि ॥ रामनाम जपु तुलसी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥ रामनाम दुइआखर हिय हितु जानु ॥ रामलषणसम तुलसी सिखवन आनु ॥ ४९ ॥ माय बाप गुरु स्वामि रामकर नाम ॥ तुलसी जेहि नसोहाइ ताहि विधिवाम ॥ ५० ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ विशोक ॥ लोक सकल कल्यान नीक परलोक ॥५१॥ तप तीरथ मख

दान नेम उपवास ॥ सबते अधिक राम जपु तुलसीदास ॥ ५२ ॥ महिमा रामनामकी जानमहेश ॥ देत परमपद कासी करि उपदेश ॥ ५३ ॥ जान आदिकवि तुलसीनाम प्रभाव ॥ उलटा जपत कोलते भये ऋषिराव ॥ ५४ ॥ कलसयोनि जिय जानेउ नाम प्रतापु ॥ कौतुकसागर सोखेउ करिजिय चापु ॥ ५५ ॥ तुलसी सुमिरतराम सुलभ फलचारि ॥ वेद पुराण पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥ रामनामपर तुलसीनेह निवाहु ॥ यहिते अधिक न याहसम जीवन लाहु ॥ ५७ ॥ दोषदुरित दुखदारिद दाहक नाम ॥ सकलसुमंगलदायक तुलसी राम ॥ ५८ ॥ केहिगनती महँ गनती जस वनघास ॥ राम जपत भये तुलसी तुलसीदास ॥ ५९ ॥ आगमनिगम पुराण कहत करिलीक ॥ तुलसी नामराम कर सुमिरन नीक ॥ ६० ॥ सुमिरहु नामरामकर सेवहु साधु ॥ तुलसी उतरिजाहु भवउदधि अगाधु ॥ ६१ ॥ कामधेनु हरिनाम कामतरु राम ॥ तुलसी

सुलभ चारिफल सुमिरत नाम ॥ ६२ ॥ तुलसी कहत सुनतसब समुझत
कोय ॥ बडेभाग्य अनुराग रामसन होय ॥ ६३ ॥ एकहि एक सिखावत
जपत नआप ॥ तुलसी रामप्रेमकर बाधक पाप ॥ ६४ ॥ भरत कहत
सब सबकहँ सुमिरहु राम ॥ तुलसी अबनाहिं जपत समुझि परिनाम ॥६५॥
तुलसी रामनाम जपु आलस छाँडु ॥ रामबिमुख कलिकाल कोभयो
भाँडु ॥ ६६ ॥ तुलसी रामनामसम मित्रनआन ॥ जो पहुँचाव रामपुर
तनु अवसान ॥ ६७ ॥ नामभरोस नामबल नामसनेहु ॥ जनम जनम
रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ ६८ ॥ जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि
देहु ॥ तहँ तहँ राम निबाहिब नामसनेहु ॥ ६९ ॥ इति श्रीगोसांई तुलसी
दासजीविरचितं बरवैरामायणं उत्तरकांडं समाप्तम् ॥ ७ ॥ शुभंभवतु ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना— गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना कल्याण–मुंबई.

॥ ८२ ॥ महिमा रा-

इति तुलसीदासकृतरामायण माहात्म्य

इति तुलसीदासजीवनचरित्र

इति तुलसीदासकृतबरवारामायण.

~~To~~

~~Sanjeev Kapoor~~

~~c/o Sh. [illegible]~~

~~[illegible] Poonch~~

~~(J&K) Poonch~~